है मत के अनुशासन आदि पर प्रकाश डाला गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से त्रिपिटक साहित्य का विशेष महत्व है। पाली साहित्य ग्रन्थों में *'मिलिन्द पन्हो'*, *'प्रदीपवंश'* और *'महावंश'* विशेष रूप से उल्लेखनीय है। *'प्रदीपवंश'* और *'महावंश'* में लंका के इतिहास का वर्णन प्राप्त होता है। इन दोनों ग्रन्थों में कपोल-कल्पित और अतिरंजित सामग्री पर्याप्त मात्रा में है, परन्तु भारतीय इतिहास पर भी प्रकाश डाला गया है। चन्द्रगुप्त मौर्य का विशेष ज्ञान हमें सबसे पहले इन्हीं धार्मिक ग्रन्थों से प्राप्त होता है।

जैन ग्रन्थों के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति के इतिहास में पूर्णता नहीं आ सकती है। कल्पसूत्र, आचारांग सूत्र और भद्रबाहु चरित्र नामक प्रमुख जैन-ग्रन्थ ईस्वी सन् से पूर्व पाँचवीं और छठी शताब्दियों में लिखे गये थे। जैन-ग्रन्थों में अनेकानेक ऐसी कथाएँ लिखी हैं जिनसे इतिहासकार अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। जैन-आगमन इसमें सर्वोपरि है। इसमें जैन लोगों ने अपनी प्रथम संगीति में विभिन्न विचारों और परम्पराओं को संगृहीत किया था। जैन-आगम में प्रसिद्ध स्थान बारह अंगों का है। आचारांगसूत्र के दोनों स्कन्धों में जैन भिक्षुओं के आचार-नियमों का उल्लेख है। भगवतीसूत्र से महावीर के जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

ऐतिहासिक ग्रंथों में कौटिल्य के अर्थशास्त्र को विशेष स्थान दिया जा सकता है। इसमें सम्राट् चन्द्रगुप्त के महामंत्री चाणक्य ने मौर्यकाल की राजनीतिक घटनाओं, शासन-पद्धति और जनसाधारण के सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन का पूर्ण विवरण दिया है।

कश्मीरी पंडित कल्हण द्वारा राजतरंगिणी की रचना बारहवीं शताब्दी के मध्य में हुई थी। इससे कश्मीर के इतिहास पर समुचित प्रकाश पड़ता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण की प्रधानता है। इसी ग्रन्थ में कश्मीर नरेश हर्ष की चर्चा है जो मंदिरों को लूटने के लिए एक लूट-विभाग की स्थापना की थी।

बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्षचरित' का भी बहुत बड़ा महत्व है। इसमें तत्कालीन इतिहास तथा प्राचीन कथाओं का संग्रह है। इस ग्रन्थ के द्वारा सातवीं सदी के भारत की अवस्थाओं पर प्रकाश पड़ता है।

संगम साहित्यों से दक्षिण भारत के प्राचीन राजा-महाराजाओं की शासन-सम्बन्धी अनेक बातें मालूम होती हैं। अर्द्ध ऐतिहासिक ग्रन्थों की श्रेणी में सर्वप्रथम हम पतंजलि के महाभाष्य का नाम ले सकते हैं। इससे शुंगवंश के प्रारम्भिक काल की कुछ जानकारी प्राप्त होती है। पाणिनि की अष्टाध्यायी और कात्यायन की रचनाओं से मौर्यवंश के पूर्व के भारत के इतिहास पर थोड़ा-बहुत प्रकाश पड़ता है। बिल्हण का विक्रमांकदेवचरित भी उल्लेखनीय है। यह चालुक्यवंशीय प्रसिद्ध सम्राट् विक्रमांकदेव की प्रशंसा में रचा गया था। उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। इस ग्रंथ से उसके राजत्वकाल की घटनाओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। अन्य ग्रंथ *कालिदास* का मालविकाग्निमित्रम्, *विशाखदत्त* का मुद्राराक्षस, *राजेश्वर* का प्रबन्ध कोष, *जयसिंह* का हम्मीर-मद-मर्दन, *सोमेश्वर* की कीर्ति-कौमुदी, *अरिसिंह* का सुकृति-संकीर्तन और *मेरुतुंग* के प्रबन्ध चिंतामणि हैं।

कुछ जीवनियाँ इतिहास अध्ययन के लिए विशेष महत्व रखती हैं। इसके अन्तर्गत वाण का हर्षचरित, *सन्ध्याकर नन्दी* का रामचरित (पालवंश के लिए), *आनन्दभट्ट* का बल्लालचरित (सेनवंश के लिए), *जयानक* का पृथ्वीराज विजय और *चन्दबरदाई* का पृथ्वीराज रासो, *पद्मगुप्त* का नवसाहसांकचरित (परमार वंश के लिए) और *विल्हण* का विक्रमांकदेवचरित (चालुक्य वंश के लिए)

बहुत प्रसिद्ध है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राजा हर्षवर्द्धन द्वारा रचित नाटकों प्रियदर्शिका, नागानन्द तथा रत्नावली का ऐतिहासिक महत्व है। इनमें उस समय के भारत की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति का विशद् वर्णन मिलता है।

विदेशी साहित्य - भारत में बहुत-से विदेशी भ्रमणार्थ आये थे और उन्होंने जो कुछ स्वयं देखा उन्हें अपनी यात्रा के लेखों में लिखा है। जो लोग व्यापारी अथवा राजदूत के रुप में भारत आये थे उनलोगों ने यहाँ की राजनीति, धर्म, आचार-व्यवहार आदि के सम्बन्ध में लिखा है। यद्यपि उनके विवरण अनेक स्थलों पर भ्रमात्मक हैं, परन्तु सावधानी तथा सतर्कता के साथ अध्ययन करने पर वे बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। सिकन्दर के आक्रमण से ईरान के सम्राट् डेरियम ने छठी शताब्दी ई. पूर्व में भारत पर आक्रमण करने के लिए स्काइलैक्स के सेनापतित्व में एक सेना भेजी थी। *स्काइलैक्स* ने भारत के विषय में बड़ा रोचक वर्णन किया है। यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने इस तथ्य का उल्लेख किया है। *सम्राट् डेरियम* के लेखों में भारत का उल्लेख यह सिद्ध करता है कि उस समय भारत और ईरान में राजनीतिक संबंध स्थापित हो चुके थे।

यूनानी लेखकों में *हेरोडोट्स* ने अपने लेखों में ईसा से पूर्व पाँचवी शताब्दी के भारत तथा ईरान के इतिहास का विवरण दिया। टेशियस एक यूनानी हकीम था। उसने पूर्वी देशों से लौटकर आये हुए यात्रियों के मुँह से सुन-सुनकर भारत के संबंध में अद्भुत कहानियों का संग्रह किया था। इस ग्रन्थ से कुछ सहायता मिल जाती है। सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व यूरोप वालों को भारत के विषय में कोई जानकारी नहीं थी। भारत से लौटने पर सिकन्दर के अफसरों ने जहाँ जो कुछ देखा उसका विवरण दिया। इसी आधर पर यूनान के लेखकों ने भारत के संबंध में लिखना शुरु किया। इन लेखकों में निआर्क तथा अरिस्टोबुलस विशेष उल्लेखनीय हैं। *मेगास्थनीज* अपनी पुस्तक इण्डिका में चन्द्रगुप्त मौर्य के समय के भारत के विषय में पूरा वर्णन किया है। एरियन के ग्रन्थों का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यधिक मूल्य है। *टॉलमी* ने भारत के भूगोल के विषय में तथा प्लिनी ने पशुओं और वनस्पति के विषय में सुन्दर वर्णन किया है।

चीनी यात्रियों के विवरणों से तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। चीन का प्रथम इतिहासकार शुमाशीन था। प्रथम शताब्दी ई. पू. में उसने अपने जिस इतिहास ग्रंथ का सृजन किया उसमें भारत के प्राचीन इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। फाहियान नामक चीनी यात्री चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय 379 ई. में बौद्ध धर्म-ग्रंथों का अध्ययन और अनुशीलन करने भारत आया था। उसने अपनी यात्रा पुस्तक में तत्कालीन भारत के शासन-प्रबंध, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। चीनी यात्री सुयर्वान 518 ई. में भारत आया। उसके विवरण द्वारा भी भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। ह्वेन-त्सांग 629 ई. के लगभग हर्षवर्द्धन के समय में भारत आया था। उसने अपनी पुस्तक पाश्चात्य संसार में भारतीय इतिहास पर समुचित प्रकाश डाला है। उसके मित्र ह्वी-ली ने ह्वेन-त्सांग की जीवनी में उसके यात्रा वर्णनों के संबंध में भारत का उल्लेख किया है। इत्सिंग नामक चीनी यात्री सातवीं शताब्दी में भारत आया और नालन्दा एवं विक्रमशिला में बहुत समय तक रहा। यद्यपि उसका वर्णन ह्वेन-त्सांग की भाँति विस्तृत नहीं है परन्तु उसके द्वारा तत्कालीन अवस्था के विषय में जानकारी अवश्य प्राप्त होती है। तिब्बत के लेखकों में लामा तारानाथ प्रसिद्ध है। उनके ग्रंथों-'कंग्युर' तथा 'तंग्यूर' में भी भारत का वर्णन है। 1030 ई. में अलबरूनी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'तहकीके हिन्द' लिखी जिसमें

समकालीन भारत के निवासियों का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य मुसलमान इतिहासकारों जैसे- सुलेमान, अलमसूदी, हसन निजामी, फरिश्ता और निजामुद्दीन आदि की रचनाओं से भारत के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। भारत पर अरबों के आक्रमण की जानकारी के लिए किताब-उल-फुल्क, फुतुहुल्बुल्दान, जिकेहिंद, चचनामा, बिलाजुरी आदि अरबी ग्रंथ उपयोगी है। साम्यवाद का अध्ययन अभिलेखों के अलावे ह्वेनत्सांग के यात्राविवरण (सियुली), वात्स्यायन का कामसूत्र, भगवतपुराण, ब्रह्मवैतपुराण, कुमारसम्भवम्, राजतरंगिणी, कुमारपालचरित, वर्णरत्नाकर, रासचरित आदि सैकड़ों ग्रंथों के आधार पर की जा सकती है। भारत पर गजनी और गोरी के आक्रमण के कारणों एवं परिणामों की जानकारी राजतरंगिणी, किताबुलहिन्द, तारीखे आले सुबुक्तगीन, तबकात-ए-नासिरी, ताजुलमआसिर आदि देशी-विदेशी ग्रंथों से होती है। सिन्धु घाटी सभ्यता की जानकारी के लिए जितना महत्व पुरातात्विक सामग्रियों का है उतना ही महत्व साहित्यिक स्रोतों का वैदिक काल के लिये है। पुरातात्विक सामग्रियों, मुद्रा एवं साहित्यों का एक साथ महत्व ई. पू. 600 ई. से 200 ई. तक बना रहता है। इसके बाद एक नया स्रोत-अभिलेख बाद के सैकड़ों वर्षों के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हो जाता है। अभिलेखों के साथ-साथ कुछ साहित्यों का महत्व लगभग 600 ई. से 1200 ई. के बीच विशेष रूप से बढ़ जाता है।

2

(Indu
(ई. पू.

प्राक्-हड़प्पा संस्कृति

मोहनजोदड़ो और
इतिहासकारों के बीच यह
1948 ई. में स्टुअर्ट पिगॉ
कोई आरंभ नहीं है और न
इतिहासकारों ने यह भी
मुख्यतः मेसोपोटामिया से।
पश्चात् हमारे ज्ञान में
सभ्यताएँ थीं। कुछ हद तक
से लेकर उत्तर-पाकिस्तान
संस्कृति और सभ्यता हड़
अर्द्धशहरी सीढ़ी से गुजरक
कहा जाता है।

सबसे प्राचीन
केन्द्र ई. पू. 4000 और
अपेक्षा सिन्धु क्षेत्र की ग्रा
8000 से ही आरंभ हो
प्रमाण नहीं मिलता है।
स्थायी ग्रामीण सभ्यता प
ग्रामीण सभ्यताओं के नाम

हड़प्पा संस्कृति
गंभीर परिवर्तन हुए, जिस